

डॉ. सागरमल जैन अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०२०१४)

मुख्य टाईटल

प्रकाशकीय

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड - अभिनन्दनीय जीवनकृत व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक मूल्यांकन ----- १-१००

द्वितीय खण्ड - जैन आगम साहित्य

१. अर्धमागधी आगम साहित्य एक विमर्श – डॉ. सागरमल जैन ----- १-४१
२. आगम साहित्य में प्रकीर्णकों का स्थान, महत्व, रचनाकाल एवं रचयिता – डॉ. सागरमल जैन ----- ४२-४५
३. निर्युक्ति साहित्य एक पुनर्चिन्तन – डॉ. सागरमल जैन ----- ४६-६०
४. आचारांगसूत्र एक विश्लेषण – डॉ. सागरमल जैन ----- ६१-६७
५. रामपुत्र या रामगुप्त सूत्रकृतांग के संदर्भ में – डॉ. सागरमल जैन ----- ६८-६९
६. अन्तकृदशा की विषयवस्तु एक पुनर्विचार – डॉ. सागरमल जैन ----- ७०-७३
७. प्रश्नव्याकरण की प्राचीन विषयवस्तु की खोज – डॉ. सागरमल जैन ----- ७४-८२
८. जैन, बौद्ध और औपनिषदिक ऋषियों के उपदेशों का प्राचीनतम संकलन ऋषिभाषित – डॉ. सागरमल जैन ----- ८३-९०
९. मूलाचार एक विवेचन – डॉ. सागरमल जैन ----- ९१-९५

तृतीय खण्ड - दर्शन

१०. जैनदर्शन में सत् का स्वरूप – डॉ. सागरमल जैन ----- ९७-१०१
११. जैन दर्शन में द्रव्य, गुण एवं पर्याय की अवधारणा – डॉ. सागरमल जैन ----- १०१-१०५
१२. जैन दर्शन में पंच अस्तिकाय और षट् द्रव्यों की अवधारणा – डॉ. सागरमल जैन ----- १०६-११२
१३. महावीर कालीन विभिन्न आत्मवाद एवं जैन आत्मवाद का वैशिष्ट्य – डॉ. सागरमल जैन ----- ११२-११७
१४. जैन दर्शन में आत्मा-स्वरूप एवं विश्लेषण – डॉ. सागरमल जैन ----- ११७-१२६
१५. षट्जीव निकाय में त्रस एवं स्थावक के वर्गीकरण की समस्या – डॉ. सागरमल जैन - १२६-१३०
१६. जैन दर्शन में पुद्गल और परमाणु – डॉ. सागरमल जैन ----- १३०-१४०
१७. जैन दर्शन में ज्ञान के प्रामाण्य और कथन की सत्यता का प्रश्न – डॉ. सागरमल जैन ----- १४१-१४५
१८. जैन वाक्य दर्शन – डॉ. सागरमल जैन ----- १४६-१५३
१९. स्यादवाद और सप्तभंगी एकचिन्तन – डॉ. सागरमल जैन ----- १५४-१६८
२०. प्रमाण- लक्षण- निरूपण में प्रमाण मीमांसा का अवदान – डॉ. सागरमल जैन ----- १६८-१७१
२१. जैन दर्शन के तर्क प्रमाण का आधुनिक सन्दर्भों में मूल्यांकन – डॉ. सागरमल जैन - १७२-१८४
२२. मूल्य दर्शन और पुरुषार्थ चतुष्टय – डॉ. सागरमल जैन ----- १८४-१९२

२३. जैन शिक्षा दर्शन – डॉ. सागरमल जैन -----	१९३-१९८
२४. जैन कर्म सिद्धान्त एक विश्लेषण – डॉ. सागरमल जैन-----	१९९-२१७
२५. प्राचीन जैन आगमों में चावार्क दर्शन का प्रस्तुतीकरण एवं समीक्षा – डॉ. सागरमल जैन -----	२१७-२२३
२६. अद्वैतवाद में आचार दर्शन की सम्भावना जैन द्रष्टि से समीक्षा – डॉ. सागरमल जैन	२२४-२२६
२७. महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के जैन धर्म सम्बन्धी मन्तव्यों की समालोचना – डॉ. सागरमल जैन -----	२२६-२२९
२८. जैन दर्शन और आधुनिक विज्ञान – डॉ. सागरमल जैन - -----	२३०-२३६
चतुर्थ खण्ड - नितिदर्शन और आचारशास्त्र	
२९. जैन नीति दर्शन के मनोवैज्ञानिक आधार – डॉ. सागरमल जैन -----	२३७-२४१
३०. नैतिक प्रतिमान एक या अनेक – डॉ. सागरमल जैन -----	२४१-२४४
३१. नैतिक मूल्यों की परिवर्तनशीलता – डॉ. सागरमल जैन -----	२४४-२५०
३२. सादाचार के शाश्वत मानदण्ड और जैन धर्म – डॉ. सागरमल जैन -----	२५०-२५८
३३. जैन दर्शन में नैतिक मूल्यांकन का विषय – डॉ. सागरमल जैन -----	२५९-२६४
३४. जैन धर्म में नैतिक और धार्मिक कर्तव्यता का स्वरूप – डॉ. सागरमल जैन -----	२६५-२६६
३५. जैन आचार में उत्सर्ग मार्ग और अपवाद मार्ग – डॉ. सागरमल जैन -----	२६७-२७०
३६. जैन धर्म में प्रायश्चित एवं दण्ड- व्यवस्था – डॉ. सागरमल जैन -----	२७०-२८०
३७. नीति के मानवतावादी सिद्धान्त और जैन आचार दर्शन – डॉ. सागरमल जैन -----	२८१-२८४
३८. जैन आचार में अचेलकत्व और सचेलकत्व का प्रश्न – डॉ. सागरमल जैन -----	२८५-२९९
३९. जैननीति- दर्शन की सामाजिक सार्थकता – डॉ. सागरमल जैन -----	३००-३०६
४०. जैनधर्म में अहिंसा की अवधारणा एक विश्लेषण – डॉ. सागरमल जैन -----	३०७-३१३
४१. अहिंसा एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. सागरमल जैन -----	३१४-३१९
४२. भगवान महावीर का अपरिग्रह- सिद्धान्त और उसकी उपादेयता – डॉ. सागरमल जैन	३१९-३२१
४३. श्रावक आचार की प्रासंगिकता का प्रश्न – डॉ. सागरमल जैन -----	३२२-३३३
पंचम खण्ड - धर्म और साधना	
४४. जैनधर्म के मूल तत्त्व – डॉ. सागरमल जैन-----	३३४-३४०
४५. अध्यात्म और विज्ञान – डॉ. सागरमल जैन -----	३४१-३४४
४६. धर्म का मर्म जैन द्रष्टि – डॉ. सागरमल जैन -----	३४५-३५५
४७. धार्मिक सहिष्णुता और जैनधर्म – डॉ. सागरमल जैन -----	४५६-३६७
४८. जैन साधना के मनोवैज्ञानिक आधार – डॉ. सागरमल जैन -----	३६८-३७०
४९. मन-शक्ति, स्वरूप और साधना एक विश्लेषण – डॉ. सागरमल जैन -----	३७०-३८३
५०. जैनधर्म का लेश्या सिद्धान्त एक मनोवैज्ञानिक विमर्श – डॉ. सागरमल जैन -----	३८४-३९१
५२. जैनधर्म में मुक्ति की अवधारणा – डॉ. सागरमल जैन -----	३९२-३९८
५३. स्त्री, अन्यतैथिक एवं सवस्त्र की मुक्ति का प्रश्न – डॉ. सागरमल जैन -----	३९८-४०६
५४. बन्धन से मुक्ति की ओर – डॉ. सागरमल जैन -----	४०७-४०९

५५. जैनधर्म का त्रिविध साधना मार्ग – डॉ. सागरमल जैन -----	४१०-४१५
५६. भेद विज्ञान मुक्ति का सिंहद्वार – डॉ. सागरमल जैन -----	४१६-४१९
५७. समाधिमरण(मृत्युवरण) एक तुलनात्मक तथा चनाकाल एवं रचयिता – डॉ. सागरमल जैन -----	४२०-४२५
५८. जैनागमों में समाधिमरण की अवधारणा – डॉ. सागरमल जैन -----	४२५-४३२
५९. जैनधर्म में स्वाध्याय का अर्थ एवं स्थान – डॉ. सागरमल जैन -----	४३३-४३६
६०. जैनधर्म में भक्ति की अवधारणा – डॉ. सागरमल जैन -----	४३६-४४५
६१. जैन साधना का आधार-सम्यग्दर्शन – डॉ. सागरमल जैन -----	४४६-४६१
६२. जैन साधना में ध्यान – डॉ. सागरमल जैन -----	४६२-४८०
६३. तन्त्रसाधना और जैन जीवन-द्रष्टि – डॉ. सागरमल जैन -----	४८१-४८७
६४. जैनधर्म में पूजा- विधान और धार्मिक अनुष्ठान – डॉ. सागरमल जैन -----	४८८-४९७
६५. जैन साधना में प्रणव का स्थान – डॉ. सागरमल जैन -----	४९८-५००
६६. साधना और समाज सेवा का सह जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में – डॉ. सागरमल जैन ---	५०१-५०४
६७. साधना और सेवा का सह सम्बन्ध – डॉ. सागरमल जैन -----	५०५-५०८
६८. पर्युषणपर्व एक विवेचन – डॉ. सागरमल जैन -----	५०९-५१४
६९. दशलक्षणपर्व दशलक्षण धर्म – डॉ. सागरमल जैन -----	५१६-५२२

षष्ठ खण्ड समाज और संस्कृति

७०. भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप – डॉ. सागरमल जैन -----	५२३-५२४
७१. भारतीय दर्शन में सामाजिक चेतना – डॉ. सागरमल जैन -----	५२६-५३२
७२. जैन धर्म में सामाजिक चिंतन – डॉ. सागरमल जैन -----	५३३-५४०
७३. जैन धर्म और सामाजिक समता – डॉ. सागरमल जैन -----	५४०-५४९
७४. जैन धर्म में नारी की भूमिका – डॉ. सागरमल जैन -----	५४९-५६८
७५. सतीप्रथा और जैनधर्म – डॉ. सागरमल जैन -----	५६८-५७१
७६. जैन एवं बौद्धधर्म में स्वहित एवं लोकहित का प्रश्न – डॉ. सागरमल जैन -----	५७२-५७४
७७. पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या और जैनधर्म – डॉ. सागरमल जैन -----	५७९-५७९
७८. जैन एकता का प्रश्न – डॉ. सागरमल जैन -----	५८०-५८९

सप्तम खण्ड परम्परा और ईतिहास

७९. श्रमण एवं वैदिक धारा का विकास एवं पारस्परिक प्रभाव – डॉ. सागरमल जैन ----	५९१-६०३
८०. जैन धर्म की परम्परा ईतिहास के झरोखे से – डॉ. सागरमल जैन -----	६०३-६११
८१. जैन ईतिहास अध्ययन-विधि एवं मूल स्रोत – डॉ. सागरमल जैन -----	६११-६१४
८२. जैन धर्म का एक विलुप्त सम्प्रदाय यापनीय – डॉ. सागरमल जैन -----	६१२-६२६
८३. ऊच्चैर्नागर शाखा के उत्पत्ति स्थल एवं उमास्वाति के जन्मस्थान की पहचान – डॉ. सागरमल जैन -----	६२७-६२९
८४. श्वेताम्बर मूलसंघ एवं माथुरसंघ एक विमर्श – डॉ. सागरमल जैन -----	६३०-६४२
८५. जैन परम्परा में बाहुबलि – डॉ. सागरमल जैन -----	६४३-६४६

८६. श्वेताम्बर परम्परा में रामकथा – डॉ. सागरमल जैन -----	६४७-६५४
८७. तार्किक शिरोमणि आचार्य सिद्धसेन(दिवाकर) – डॉ. सागरमल जैन -----	६५४-६६३
८८. समदर्शी आचार्य हरिभद्र – डॉ. सागरमल जैन -----	६६४-६८८
८९. आचार्य हेमचन्द्र एक युगपुरुष – डॉ. सागरमल जैन -----	६८८-६९२
९०. जटासिंह नन्दी का वारांगचरित और उसकी परम्परा – डॉ. सागरमल जैन -----	६९३-६९८
९१. जैनधर्म में तीर्थ की अवधारणा – डॉ. सागरमल जैन -----	६९९-७०८
९२. अशोक के अभिलेखों की भाषा मागधी या शौरसेनी – डॉ. सागरमल जैन -----	७०८-७११
९३. जैनागम धर्म में स्तूप – डॉ. सागरमल जैन -----	७१२-७१६
९४. सम्राट अकबर और जैनधर्म – डॉ. सागरमल जैन -----	७१७-७१९
९५. खजुराहो की कला और जैनाचार्यों की समन्वयात्मक एवं सहिष्णुं द्रष्टि – डॉ. सागरमल जैन -----	७१९-७२१

English section

1. Jaina Literature form earliest time to c 10 th A.D. – Dr. Sagarmal Jain-----	1-14
2. Origin and Development of jainism – Dr. Sagarmal Jain-----	15-21
3. Historical Development of jaina philosophy and Religious – Dr. Sagarmal Jain ---	22-60
4. Brahmanic& Sramanic Culture, a comparative study – Dr. Sagarmal Jain -----	61-62
5. Samatva Yoga the fundamental teaching of jainis & Gita – Dr. Sagarmal Jain----	63-65
6. Jaina's concept of peace – Dr. Sagarmal Jain-----	66-73
7. Religious Harmony and Fellowship of fith – Dr. Sagarmal Jain-----	74-83
8. The solution of world problems A jaina Perspective – Dr. Sagarmal Jain-----	84-88
9. The concept of non-violence in jainism – Dr. Sagarmal Jain -----	89-93
10. The role of parents, teachers and society in stilling cultural values – Dr. Sagarmal Jain -----	94-95
11. Equanimity and meditation (samayika and dhyana) – Dr. Sagarmal Jain -----	96-97
12. The concept of Vibhajjavada and its impact on Philosophical & Religious tolerance in Buddhism and jainism – Dr. Sagarmal Jain -----	98-100
13. The teachings of arhat parsva& distinctness of his sect – Dr. Sagarmal Jain-	101-105
14. Reconsidering The date of nirvana of lord mahavira – Dr. Sagarmal Jain -----	106-114
15. Porf K.S murthyas philosophy of peace and non violence – Dr. Sagarmal Jain	115-118